प्रति,

जनवाणी कार्यक्रम
कमरा नम्बर 512, दूरदर्शन केन्द्र
आकाशवाणी भवन, संसद मार्ग
नई दिल्ली ।

दिनांक 4 -5-85

विषय : शिक्षा में मौलिक परिवर्तन हेतु सुझाव -

= मानव ने शिक्षा से क्या पाना चाहा ? इसे सफल बनाने के लिये क्या शासन ने कभी प्रयास किया ?

= प्रत्येक मनुष्य समाधान, समृद्धि, अभय और सहअस्तित्व चाहता है ।

= शिक्षा मूलत: जनाकांक्षा पर ही आधारित होने से ही सफल होगी अन्यथा असफलता हाथ लगेगी जो यथास्थिति है ।

= शिक्षा व्यवहार एवं व्यवसाय के अर्थ में सार्थक होती है । व्यवहार शिक्षा समाधान, अभय एवं सहअस्तित्व को प्रकाशित करती है जबकि व्यवसाय शिक्षा भौतिक समृद्धि को सफल बनाती है व्यवहार शिक्षा के अभाव में व्यवसाय शिक्षा सम्भव नहीं होती ।

= वर्तमान में दी जाने वाली शिक्षा को शासन स्वयं व्यवसाय शिक्षा कहती है । उसका ही मूल्यांकन करने में शासन अपने को धन्य समझ रही है, तब सद्व्यवहार की अपेक्षा शासन किस आधार पर करती है ?

= पठित व्यक्तियों से और विद्यार्थियों से यदि सद्व्यवहार पाना है तब व्यवसाय शिक्षा के साथ व्यवहार शिक्षा को समावेश करना ही होगा ।

= क्या शासन ने व्यवहार शिक्षा के बारे में कुछ सोचा है ? या सोचने के लिये तैयार है ? यदि व्यवहार शिक्षा सामग्री उपलब्ध हो जावे तो क्या शासन उसे शिक्षा में समावेश करने के लिये तत्पर है ।

= यदि शासन ने व्यवहार शिक्षा के बारे में सोचा है तो वह शिक्षा में प्रभावशील क्यों नहीं हुआ ? यदि नहीं सोचा है और अब सोचने के लिये तैयार है । उस स्थिति में मेरे सुझाव इस प्रकार हैं -

(क) विज्ञान के साथ चैतन्य पक्ष का अध्ययन कराया जावे ।

(ख) मनोविज्ञान के साथ संस्कार पक्ष का अध्ययन कराया जावे ।

.. क्रमश: 2 ..

(ग) दर्शनशास्त्र के साथ क्रिया पक्ष का अध्ययन कराया जावे ।

(घ) अर्थशास्त्र के साथ प्राकृतिक एवं वैकृतिक ऐश्वर्य की सदुपयोगात्मक एवं सुरक्षात्मक नीति का अध्ययन कराया जावे।

(च) राज्यनीति शास्त्र के साथ मानवीयता के संरक्षणात्मक तथा संवर्धनात्मक नीति पक्ष का अध्ययन कराया जावे ।

(छ) समाज शास्त्र के साथ मानवीय संस्कृति व सभ्यता पक्ष का अध्ययन कराया जावे ।

(ज) भूगोल और इतिहास के साथ मानव तथा मानवीयता का अध्ययन कराया जावे ।

(झ) साहित्य के साथ तात्विक पक्ष का अध्ययन कराना अनिवार्य है । उपरोक्त तत्वों को शिक्षा में समावेश किये बिना शिक्षा की पूर्णता सिद्ध नहीं होती अस्तु प्रत्येक स्तर की पाठ्य पुस्तिकाओं को तैयार करने के लिये शासन व्यवस्था प्रदान करे तभी शिक्षा में मौलिक परिवर्तन हो पायेगा अन्यथा असम्भव है ।

शिक्षा में मौलिक परिवर्तन के लिये दर्शन उपलब्ध है, सुअवसर मिला है, अधिकार शासन में सन्निहित है । इसे क्रियान्वित कर राष्ट्र को गौरवान्वित ~~बनावें~~ करें, इसी में मानव का शुभ है ।

भवदीय,

(ए. नागराज शर्मा)
श्री भजनाश्रम, श्री नर्मदाचल, अमरकंटक
जिला शहडोल (म.प्र.)

संलग्न -

1. मानवीय शिक्षा के प्रारूप की प्रति/
~~जिला - शहडोल म.प्र.)~~